इकाई 5: संप्रेषण कौशल
Unit 5 : Communication Skills

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

5.0 उद्देश्य (Objective)

5.1 प्रस्तावना (Introduction)

5.2 संप्रेषण का अर्थ (Meaning of Communication)

5.3 संप्रेषण के प्रकार (Types of Communication)

5.4 संप्रेषण में भाषा का महत्त्व (Significance of Language in Communication)

5.5 भाषायी संप्रेषण कौशल (Lingual Communication Skills)

5.6 मौखिक संप्रेषण (मौखिक अभिव्यक्ति) कौशल (Oral Communication Skill)

5.7 सारांश (Summary)

5.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

5.9 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

5.0 उद्देश्य (Objective)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् छात्रगण :

- संप्रेषण कौशल को बता सकेंगें
- भाषायी संप्रेषण कौशल को गहराई से चर्चा कर सकेगे।
- मौखिक संप्रेषण कौशल तथा इसके महत्त्व को जान सकेंगे।
- कक्षा-कक्ष में अभिव्यक्ति कौशल के विकास का विश्लेषण कर सकेंगे।
- कक्षा-कक्ष में संप्रेषण कौशल के महत्त्व की समीक्षा कर सकेंगे।

उपर्युक्त का अध्ययन करना ही इस तथ्य का उद्देश्य है।

5.1 प्रस्तावना / परिचय (Introduction)

हम सभी यह जानते हैं कि प्रभावी एवं धारा प्रवाह बोलने की योग्यता का जीवन में अत्यधिक महत्व है। लेकिन बोलने का सही कौशल और सहजता विभिन्न स्थितियों या अवसरों पर अभिव्यक्ति के वास्तविक अभ्यास द्वारा ही संभव है।

इस प्रकार संप्रेषण मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकता होती है। कक्षा-कक्ष में सीखने-सीखाने की विभिन्न गतिविधियों में संप्रेषण का अपना एक अलग महत्व होता है। संप्रेषण की प्रक्रिया में भाषा की अहम भूमिका होती है। सहजता तथा बोधगम्यता के दृष्टिकोण से भाषा में यदि मातृभाषा का उपयोग किया जाए तो बेहतर माना गया है। भाषायी संप्रेषण कौशल में मौखिक संप्रेषण कौशल को मुख्य माना गया है जिसे विकसित करने का प्रयास इस इकाई में किया गया है।

5.2 संप्रेषण का अर्थ (Meaning of Communication)

संप्रेषण से तात्पर्य है-भाव, विचार, सूचना, संदेश आदि को एक इकाई से दूसरी इकाई तक पहुँचाना और प्रतिक्रिया प्राप्त करना। हिन्दी में प्रयुक्त 'संप्रेषण' शब्द अंग्रेजी के 'Communication' का अनुवाद है। अंग्रेजी का शब्द लैटिन भाषा से बना है, जिसका अर्थ है-सामान्य भागीदारी युक्त सूचना और उसका संप्रेषण। अर्थात् संप्रेषण एक ऐसा प्रयास है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विचारों, भावनाओं एवं मनोवृत्तियों में सहभागी होता है।

इस प्रकार विचारों, भावनाओं एवं अभिव्यक्तियों के उन सभी रूपों को संप्रेषण कहते हैं जो परस्पर साझेदारी के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। संप्रेषण की समझ बढ़ाने के लिए विद्वानों के विचारों और परिभाषाओं का अध्ययन करना अति आवश्यक होता है।

संप्रेषण से आशय उन समस्त साधनों से है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने विचारों को दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क में डालने के लिए अथवा उसे समझाने के लिए अपनाता है। यह वास्तव में दो व्यक्तियों के मस्तिष्क के बीच की खाई को पाटनेवाला सेतु है। इसके अन्तर्गत सुनने, बोलने तथा समझने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया सदैव चालू रहती है।''

''सूचना, विचारों और अभिव्यक्तियों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक संप्रेषित करने की कला का नाम संप्रेषण है।'' (डा० श० सिंह, P-6)

संक्षेप में, उपर्युक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि

- संप्रेषण में संप्रेषक और प्रापक के बीच अन्त:क्रिया होती है।
- संप्रेषण करने वाले को संप्रेषक कहा जाता है और उसे प्राप्त करने वाले को प्रापक, ग्रहीता या श्रोता कहा जाता है।

- संप्रेषण करके एक व्यक्ति समूह आदि अपना संदेश दूसरे व्यक्ति, समूह आदि तक पहुँचाता है।
- यह संदेश भाव, विचार, मनोवृत्ति, सूचना आदि के रूप में संप्रेषित होता है।
- संप्रेषण का उद्देश्य ग्रहीता के विचार–व्यवहार में परिवर्तन करना है।
- संप्रेषण में भाषा की भूमिका अति महत्वपूर्ण होता है।
- संप्रेषण की प्रक्रिया एक पक्षीय, द्विपक्षीय तथा पहुपक्षीय भी होता है।
- यह एक संयोगात्मक प्रक्रिया है।
- यह अर्थपूर्ण प्रक्रिया होती है।
- अर्थपूर्ण संदेश किसी माध्यम के द्वारा ही संपन्न होता है।

स्त्रोत–सार्थक संदेश माध्यम ग्रहणकर्त्ता प्रभाव प्रतिपुष्टि

5.3 संप्रेषण के प्रकार (Types of Communication)

संप्रेषण की प्रक्रिया विभिन्न स्तरों पर घटित होती रहती है।

- यह प्रक्रिया किसी एक व्यक्ति के मानसिक स्तर पर घटित हो सकती है।
- दो या दो से अधिक व्यक्ति के स्तर पर घटित हो सकती है।
- कुछ लोगों के समूह में घटित हो सकती है।

अत: संप्रेषण के विभिन्न रूपों एवं प्रकारों का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है :-

5.3.1 अन्तःवैयक्तिक संप्रेषण (Intra-personal Communication)

संप्रेषण की प्रक्रिया न केवल बाहरी समाज में घटित होती है बल्कि व्यक्ति के अन्तर्मन में भी निरंतर सक्रिय रहती है। मनुष्य विवेकशील एवं चिंतनशील प्राणी है। कुछ भी कार्य करने से पूर्व वह उस पर विचार करता है यानि वह उसके बारे में सोचता है। उसकी यह विचार और चिंतन प्रक्रिया 'स्व संप्रेषण' पर आधारित होती है। व्यक्ति कुछ भी करने और कुछ भी कहने से पहले उठते हुए विचार संवादों का रूप ले लेते हैं। वस्तुत: यह एक अवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के मन के दायरे में ही संपन्न होती है। यह संप्रेषण व्यक्ति के स्वयं के मानसिक स्तर पर होता है तथा स्व उत्तरात्मक फीडबैक के आधसार पर अपना स्व परिमार्जन करता है। आत्म विवेचन, आत्मा विश्लेषण, तर्क–वितर्क, अन्तर्द्वन्द्व आदि इसी श्रेणी के संप्रेषण है। इस महत्वपूर्ण कार्य में संप्रेषण के माध्यम के रूप में व्यक्ति की अपनी मातृभाषा की भूमिका सर्वोतम माना जाता है।

5.3.2 अंतर्वैयक्तिक संप्रेषण (Inter-personal Communication)

दो या दो से अधिक लोगों के मध्य होने वाले संप्रेषण को अन्तवैर्यक्तिक संप्रेषण कहते हैं। इस संप्रेषण की प्रक्रिया में एक व्यक्ति द्वारा प्रेषित संदेश दूसरे व्यक्ति द्वारा सीधे ग्रहण किया जाता है। जहाँ फीडबैक तुरंत संभव होता है।

इस संप्रेषण की प्रक्रिया में दो या दो से अधिक व्यक्ति आमने-सामने रहकर कहीं भी किसी भी माध्यम के द्वारा संपर्क स्थापित कर सकते हैं। इसमें संदेशों का संप्रेषण मौखिक अथवा स्पर्श, चेहरे का हाव-भाव या शरीर की मुद्राओं से भी संभव हो सकता है। ऐसे संप्रेषण में मुख्य रूप से पाँच अवयव होते हैं-स्रोत, संदेश, श्रोता, प्रभाव, फीडबैक।

इस प्रक्रिया में स्त्रोत स्रोता को सीधे प्रभावित करता है :

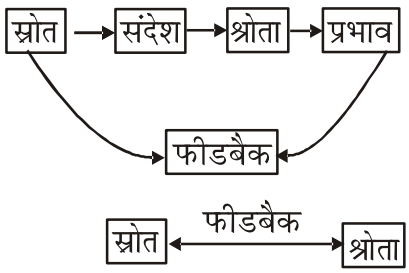

अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण

अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण न सिर्फ दो व्यक्तियों बल्कि दो से अधिक छोटे-छोटे समूहों परन्तु इसकी संपन्नता के लिए समूह का आकार छोटा होना अनिवार्य होता है। जिससे समूह के मध्य तुरंत फीडबैक हो सके तथा समूह के व्यक्तियों में परस्पर अर्थपूर्ण संप्रेषण कायम हो सके। चर्चा-परिचर्या, गोष्ठियाँ, कक्षागत बातचीत, छोटे-छोटे क्रियात्मक समूह के सदस्यों के बीच बातचीत को अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

इस प्रकार शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं में इस प्रकार के अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण कौशल का विकसित होना अधिक प्रभावशाली माना जाता है क्योंकि यह ज्यादा आंतरिक है।

5.3.3 समूह संचार (Group Communication)

समूह संप्रेषण अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण का विस्तार है। ''जब विराट स्तर पर विचार, गोष्ठी, कार्य शिविर, सार्वजनिक व्याख्यान तथा सभाओं आदि में विचारों का आदान-प्रदान होता है तो उसे समूह-संप्रेषण कहते हैं।''

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति को अपना तथा अपने समूह का विकास करने के लिए एक-दूसरे से भाव-भावनाओं एवं विचारों का संप्रेषण करना अनिवार्य होता है। सामूहिक वाद-विवाद, भाषण (मौखिक अभिव्यक्ति) नाट्यशालाओं में सामूहिक अवलोकन, लघुनाटिका आदि समूह संप्रेषण के उदाहरण हैं। यहाँ भी उल्लेखनीय है कि समूह संप्रेषण की प्रक्रिया तभी सफलतापूर्वक संपन्न हो सकती है, जबकि उसका दायरा सीमित हो। इसलिए समूह संप्रेषण प्रक्रिया विशिष्ट स्थान, क्षेत्र, जाति, मातृभाषा या अर्जित भाषा इत्यादि दायरों में ही सीमित रहती है।

समूह संप्रेषण की प्रक्रिया में समूह के सदस्य, समूह की समस्या, मूल उद्देश्य के अनुरूप संदेश प्रस्तुत करते हैं। उसी के अनुरूप फीडबैक होता है। इसमें संप्रेषक और श्रोता में निकटता होने के बावजूद भी फीडबैक के लिए परेक्ष तरीका भी अपनाना पड़ता है। जैसे-विचार-गोष्ठी में कोई श्रोता समस्या समाधान के लए वक्ता के पास पर्ची लिखकर भेजता है।

5.3.4 जन संचार (Mass Communication)

संप्रेषण की वह प्रक्रिया जो कोई भी यांत्रिक उपकरण द्वारा संदेश को एक साथ एक बड़े बिखरे जनसमूह तक पहुँचाता है जिसे जनसंचार कहते हैं। जैसे-रेडियो, टी०वी०, फिल्म, पत्र-पत्रिकाएँ पुस्तकें, इत्यादि। जन संप्रेषण की प्रक्रिया में संप्रेषक एक ही जगह से अधिकाधिक श्रोताओं से संचार करता है और विभिन्न माध्यमों से फीडबैक भी प्राप्त करता है। इन्हीं कारणों से जन संप्रेषण का प्रभाव दिन-व-दिन अधि क व्यापक होता जा रहा है। आज के युग में जन संप्रेषण का उपयोग सूचना प्रेषण, विश्लेषण एवं ज्ञान का प्रसार तथा मनोरंजन के लिए किया जा रहा है।

5.4 संप्रेषण में भाषा का महत्त्व (Importance of Language in Communication)

मातृभाषा विचारों के विनिमय अर्थात् संप्रेषण का एक महत्वपूर्ण यंत्र है। इसके माध्यम से हम बोलकर और लिखकर हम अपने विचारों को दूसरे तक पहुँचाते हैं और दूसरे हम तक। विचार-विनिमय का यह कार्य तब तक सफलतापूर्वक नहीं किया जा सकता जब तक हमें ठीक-ठीक बोलने और लिखने की कौशल विकसित न हो जाए। यह योग्यता मातृभाषा से ही मुख्य रूप से प्राप्त हो पाती है, अन्य भाषा के अपेक्षा में। इस प्रकार प्रभावी संप्रेषण के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण माध्यम है। साथ ही संप्रेषण में उपयोग किए जाने वाली भाषा समझ का माध्यम भी होता है।

5.4.1 भाषा समझ के माध्यम के रूप में (Language as a medium of understanding)

विचार-विनिमय की प्रक्रिया अर्थपूर्ण तब माना जाता है जब अपनाई जाने वाली भाषा सबों के लिए सहज तथा आसान हो। मातृभाषा की सहज स्वाभाविक स्वच्छन्द धारा की प्रवाह अर्थपूर्ण होता है। बच्चों

की अपनी भाषाई परिवेश होती है जहाँ सोचने का खास ढंग होता है क्योंकि वह एक विशेष वातावरण में पला बढ़ा है। थोड़ा-बहुत परिवर्तन के साथ भाषा की अविरल धारा का प्रवाह संपूर्ण संप्रेषणीय वातावरण को अर्थपूर्ण बनाता है।

बच्चे अपने परिवार और समाज की भाषा में बोलना सीखता है और अभ्यास द्वारा उस पर अधिकार प्रप्त करता है। बचपन की सीखी गई भाषा में यदि नये-नये विचार दिए जाते हैं, तो उन्हें वह आसानी से ग्रहण करता है।

परन्तु दूसरी भाषा से यदि विचार सीखना पड़ता है, तो विचार की नवीनता के साथ-साथ उसके मार्ग में अन्य भाषा की दुरूहता आ खड़ी होती है। मातृभाषा का पूर्ण ज्ञान होना बालक के संप्रेषणात्मक क्षमता का उत्तरोत्तर विकास करता है। संप्रेषण में भाषा के स्थान पर यदि मातृभाषा को महत्व दिया जाता है तो उसके बौद्धिक ज्ञान का विकास, आत्मभाव-प्रकाशन का विकास सर्जनात्मक और उत्पादक शक्तियों का विकास उत्तरोत्तर होता है।

5.5 भाषायी संप्रेषण कौशल (Lingual Communication Skill)

किसी कार्य को करने में दो प्रकार की योग्यता वांछनीय होती है :-सामान्य तथा विशेष। परन्तु बहुत से कार्य विशेष अभ्यास तथा परिश्रम की मांग करते हैं। इसी अभ्यास तथा परिश्रम से व्यक्ति उस विशेष कार्य को संपन्न करने की विशेष क्षमता अर्जित कर लेता है। यही क्षमता 'कौशल' कहलाती है।

भाषायी संप्रेषण कौशल का अर्थ भाषायी व्यवहार में कुशलता प्राप्त करना है। भाषायी कुशलता का विकास व्यवस्थित भाषा शिक्षण के माध्यम से किया जा सकता है। ऐसे तो व्यवस्थित भाषा शिक्षण के बिना भी भाषाई व्यवहार संपन्न किया जा सकता है परंतु इस कार्य को और भी प्रभावशाली बनाने के लिए भाषायी संप्रेषण कुशलताओं का विकास अति आवश्यक है।

भाषायी संप्रेषण के दो रूप हैं :-मौखिक और लिखित।

संप्रेषण में भाषा का मौखिक रूप ही प्राथमिक है। प्रथम भाषा शिक्षण में मुख्यत: भाषा के लिखित रूप पर विशेष बल दिया जाता है, परन्तु अन्य भाषा शिक्षण में भाषा के मौखिक तथा लिखित दोनों रूपों पर बल दिया जाता है। सुनना (श्रवण), बोलना (मौखिक अभिव्यक्ति), पढ़ना (पठन) तथा लिखना (लेखन अभिव्यक्ति), भाषा के चार कौशल माने जाते हैं। छात्रों को इन कौशलों में निपुणता प्रदान करना तथा उसकी उत्तरोत्तर वृद्धि करना ही भाषा शिक्षण का उद्देश्य है।

भाषायी कौशल के महत्व को स्पष्ट करते हुए डॉ० शिखा चतुर्वेदी कहती है 'व्यक्ति की संप्रेषण की सक्षमता भाषा कौशलों की दक्षता पर ही निर्भर करती है। भाषा की प्रभावशीलता का मानदंड बोधगम्यता होता है। जिन भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति करना चाहते हैं उन्हें कितनी सक्षमता से बोधगम्य कराते हैं यह भाषा कौशलों के उपयोग पर निर्भर होता है।'

कैलाश चंद्र भाटिया ने भाषाई-कौशलों को दो भागों में विभाजित किया है :

(क) प्रधान कौशल – सुनना और बोलना

(ख) गौण कौशल – पढ़ना (वाचन) और लिखना

रमा शर्मा तथा एम० के० मिश्रा ने भाषाई कौशलों को ग्रहण तथा अभिव्यक्ति के आधार पर मुख्यत: दो भागों में विभाजित किया है, जिसे निम्न आरेख में दर्शाया गया है :

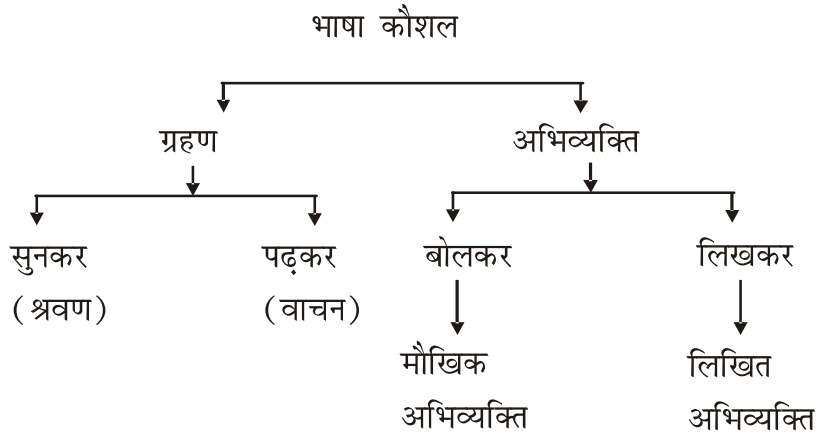

5.6 मौखिक संप्रेषण (मौखिक अभिव्यक्ति) कौशल (Oral Communication Skill)

5.6.1 मौखिक संप्रेषण कौशल (Oral Communication Skill)

मौखिक संप्रेषण कौशल का अभिप्राय है मौखिक अभिव्यक्ति कौशल जिसे भाषण कौशल भी कहा जाता है। जब व्यक्ति मौखिक रूप से अपनी बात को कहने में समर्थ हो जाता है तो उसे मौखिक अभिव्यक्ति में कुशल माना जाता है। मौखिक अर्थात् मुख से निकला हुआ। 'बोलना' अभिव्यक्ति अर्थात् स्वयं को अभिव्यक्त करना। इस प्रकार किसी विषय पर मौखिक रूप से प्रस्तुति को मौखिक अभिव्यक्ति कहा जाता है। भाषण मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थात् मौखिक संप्रेषण का चरम और परिमार्जित रूप है जबकि मौखिक अभिव्यक्ति के माध्यम से मौखिक संप्रेषणात्मक कौशल का उत्तरोत्तर विकास किया जाता है।

एन० सी० ई० आर० टी० द्वारा तैयार दस वर्षीय स्कूली पाठ्यक्रम तथा ईश्वर भाई पटेल, कमेटी ने हिन्दी शिक्षण के समय बालकों में मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास के उद्देश्य निम्न प्रकार निश्चित किए हैं :

☞ शुद्ध-शुद्ध उच्चारण कर सकें।

- ☞ व्याकरण सम्मत वाक्य बोल सकें।
- ☞ सामान्य रूप से बातचीत में भाग ले सकें।
- ☞ सरल ढंग से कविता और कहानियाँ सुना सकें।
- ☞ सरल और प्रभावी संवाद स्थापित कर सकें।
- ☞ तथ्यों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर सकें।
- ☞ प्रभावोत्पादक स्वर एवं भाषा में उत्तर देने की क्षमता का विकास हो सकें।
- ☞ शब्दों का उचित प्रयोग कर सकें।
- ☞ चर्चा-परिचर्या में सहजता से भाग ले सकें।
- ☞ संवाद सुनकर अन्त:क्रिया कर सकें।

'एन० सी० ई० आर० टी० द्वारा तैयार की गई प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (1985) में मौखिक अभिव्यक्ति अर्थात मौखिक संप्रेषण की उपेक्षा पर खेद प्रकट करते हुए कहा गया है कि यह कितने दु:ख की बात है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में तथा भाषा शिक्षण में मौखिक अभिव्यक्ति के पक्ष की नितांत उपेक्षा की गई है।

5.6.2 मौखिक संप्रेषण कौशल विकास की प्रविधियाँ (Methodology of Oral Communication Skill Development)

प्राथमिक स्तर पर छात्रों की भावाभिव्यक्ति की शक्ति, शब्दावली, अर्थबोध की क्षमता अपेक्षाकृत कम होती है। अत: अति परिचित विषयों-जैसे पठित विषयों-जैसे पठित विषयों से संबंधित प्रकरणों पर प्रश्नोत्तर एवं बातचीत द्वारा मौखिक अभिव्यक्ति की ओर छात्रों को प्रवृत्त किया जा सकता है।

5.6.2.1 प्रश्नोत्तर एवं बातचीत (Question-Answer and Conversation)

मौखिक अभिव्यक्ति अर्थात् मौखिक संप्रेषणात्मक कौशल के विकास के लिए ''प्रश्नोत्तर एवं बातचीत'' एक महत्त्वपूर्ण प्रविधि है। इस स्तर पर मौखिक अभिव्यक्ति की कुशलता के लिए निर्धारित पाठ्यवस्तु का शिक्षण की प्रक्रिया के दरम्यान बच्चों से विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से संवाद कायम करना चाहिए। छात्र ध्यानपूर्वक प्रश्नों को सुनेंगे तथा अन्त:क्रिया करते हुए अपेक्षित उत्तर देने की कोशिश करेंगे। इसके जरिए विषय-वस्तु, भाषा एवं शैली (अभिव्यक्ति की शैली) में उत्तरोत्तर परिष्कार होता है। बालक चित्रों से आकर्षित होते हैं। चित्रों को बनाना भी चाहते हैं। चित्रों द्वारा उसकी आत्माभिव्यक्ति की शक्ति का विकास भी किया जा सकता है। इसके द्वारा

- चित्रों को देखकर उनका वर्णन करने हेतु प्रेरित करना।

- चित्रों को देखकर उनपर छात्रों से प्रश्न पूछना। जैसे :
  - ☞ इसमें कितने लोग हैं ?
  - ☞ इसे क्या कहते हैं ?
  - ☞ नदी में क्या देख रहे हो ? इत्यादि।

इस प्रकार पाठ्य विषय पढ़ाते हुए या अन्य अवसरों पर छात्रों के साथ अध्यापक का वार्तालाप मौखिक अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने में सहायक होता है। प्रत्येक छात्रों को वार्तालाप में भग लेने के लिए प्रेरित करना चहिए। वार्तालाप के प्रश्न छात्रों के विषय आधारित ज्ञान तथा अनुभव परिधि के भीतर होने चाहिए।

5.6.2.2 वाद-विवाद प्रतियोगिता (Discussion)

इसमें छात्र पूर्व निर्धारित विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। यह विधि उच्च कक्षाओं के लिए अपनाई जाती है। इसमें प्रतिपक्षी वक्ता या वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत तर्कों के खंडन के लिए उसे तत्काल उचित तर्क सोचना, उचित भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। छात्रों में यहाँ आत्माभिव्यक्ति की कुशलता इस प्रकार विकसित होने चाहिए कि वे अपने प्रतिपक्षों द्वारा प्रस्तुत तर्कों का पूर्वानुमान (अन्तःक्रिया द्वारा) कर उसके उत्तर के लिए स्वयं को तैयार रख सकें तथा स्वयं को प्रस्तुत करें।

इस प्रकार वाद-विवाद प्रतियोगिता के अन्तर्गत अन्तःवैयक्तिक संप्रेषण तथा अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण कायम होता है। मौखिक संप्रेषण कौशल के विकास में ऐसे प्रविधियों का अपना एक अलग महत्व होता है। कुशलता के विकास के लिए यह अति आवश्यक होता कि समय-समय पर विभिन्न अवसरों के उपलक्ष्य पर अलग-अलग विषय-वस्तु आधारित वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय स्तर पर होते रहना चाहिए जहाँ एक सफल पेशेवर शिक्षक का मार्गदर्शन महत्त्वपूर्ण होता है।

5.6.2.3 भाषण (Declamation Contests)

भाषण का प्रारंभ माध्यमिक कक्षाओं से किया जाना चाहिए। व्यक्ति में वक्तृत्व कला एकाएक विकसित नहीं हो पाता है। इसके लिए जरूरी होता है बार-बार छात्रों को मंच प्रदान की जाए। वक्तृत्वकला की विभिन्न विशेषताएँ जैसे-निर्भीकता, आत्मविश्वास, विषय ज्ञान, उपस्थित श्रोताओं को उचित रीति से संबोधन, हाव-भाव आदि। इसके लिए आवश्यक होता है कि माध्यमिक कक्षाओं में सीमित शब्दावली तथा धीरे-धीरे ऊँची कक्षाओं में अधिकाधिक शब्दावली के प्रयोग पर बल दिया जाए। कक्षा 10 और 11 के छात्रों के लिए अधिक से अधिक पाँच मिनट का आशु भाषणस का आयोजन किया जा सकता है।

5.7 सारांश (Summary)

हमारे दैनिक जीवन में बोलचाल का महत्व हमें मालूम है। घर में, खेत में, विद्यालय में, समाज

में–प्रत्येक स्थान पर बोलचाल की जरूरत पड़ती है। जो बोलकर दूसरे को प्रभावित कर सकते हैं, उनकी कद्र समाज में अधिक होती है।

ठीक इसी प्रकार समग्र पाठ्यचर्या में भाषा की भूमिका अहम होती है। व्यक्ति विभिन्न मुद्दों पर अपने भावों, विचारों, तर्कों को प्रभावशाली ढंग से रखने का प्रयास अवश्य करते हैं। जहाँ संप्रेषण कौशल की भूमिका अति महत्वपूर्ण नजर आती है। भाषा प्रयोग के चार प्रमुख कौशलों में मौखिक आत्माभिव्यक्ति की कुशलता काफी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। मौखिक आत्माभिव्यक्ति के उन्नति का व्यापक प्रभाव लिखित आत्माभिव्यक्ति पर पड़ता है। मौखिक आत्माभिव्यक्ति संप्रेषण कौशल की प्रथम सीढ़ी मानी जाती है जहाँ एक पेशेवर शिक्षक को अति संवेदनशील होने की आवश्यकता है। समग्र पाठ्यचर्या से भाषा में संप्रेषणात्मक कौशल का विकास अन्य विषयों को भी प्रभावित करता है।

5.8 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. संप्रेषण कौशल से आप क्या समझते हैं ? इसके विभिन्न प्रकारों का वर्णन करें।
   What do you mean by Communication Skill ? Describe its different types.
2. संप्रेषण कौशल के विकास में भाषा की भूमिका का वर्णन अपने अनुभवों के आधार पर करें।
   Describe the role of language in the develop the Communication Skill.

5.9 प्रस्तावित पाठ (Suggested Readings)

1. Dillon;, J.T. (1982) Cognitive correspondenc between questions/statement and response. American Educational Research Journal,19, 540-551.
2. डॉ. उमा मंगल, हिंदी शिक्षण, 1996
3. लक्ष्मी नारायण शर्मा, भाषा, जनवरी–फरवरी–2011
4. डॉ० कैलाशचन्द्र भाटिया, आधुनिक–भाषा शिक्षण, 2001
5. डॉ० शिखा चतुर्वेदी, हिंदी शिक्षण–2011
6. NCF - 2005

●●●